International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2022, Submitted in November 2022,iajesm2014@gmail.com

महिलाओं को सशक्त बनाने में शिक्षा की भूमिका

चन्दन सिंह, शोध छात्र, ग्लोकल विष्वविद्यालय, सहारनपुर (उ.प्र.)
डा0 चंद्रकांत चावला, शोध पर्यवेक्षक, ग्लोकल विष्वविद्यालय, सहारनपुर (उ.प्र.)

सार

शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण, समृद्धि, विकास और कल्याण के लिए मुख्य कारक है। गर्भ से लेकर शव तक महिलाओं के खिलाफ भेदभाव लोकप्रिय है। सभी क्षेत्रों में महिलाओं के निरंतर असमानता और विपरीतता है, और जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाएं अत्याचारित होती हैं, उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में सशक्तिकरण की आवश्यकता है। सामाजिक रूप से निर्मित लिंग भेदभाव के खिलाफ लड़ाई करने के लिए, महिलाओं को तंत्र के खिलाफ तैरना होगा जिसके लिए अधिक शक्ति की आवश्यकता है। ऐसी शक्ति शक्तिसंचय की प्रक्रिया से आती है और शक्तिसंचय शिक्षा से आएगा। और ग्रामीण विकास महिलाओं के सशक्तिकरण से होगा। यह पेपर हरियाणा राज्य में महिलाओं को विभिन्न सशक्तिकरण के बारे में जागरूकता पैदा करने और महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण में शिक्षा के प्रभाव की पहचान के लिए लक्ष्य रखता है। अध्ययन के लिए 20–50 आयु समूह की कुल 400 महिला प्रतिक्रियाएं चुनी गईं। अध्ययन के नतीजे दिखाते हैं कि शिक्षा की योग्यता महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और इसका निष्कर्ष यह है कि यदि महिलाओं को सशक्तिकरण करना है, तो इसे केवल शिक्षा के माध्यम से किया जा सकता है। इसलिए, महिलाओं के शिक्षा के स्तर को उच्च करना सर्वोपरि महत्वपूर्ण है।

कीवर्डः महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, हरियाणा,

परिचय

हर समाज, राज्य और राष्ट्र में हमेशा कई ऐसे घटक होते हैं जो अपने मौलिक अधिकारों से वंचित होते हैं, लेकिन इन घटकों को अपने अधिकारों की जागरूकता में कमी होती है। अगर हम समाज से ऐसे घटकों को दर्ज करें, तो महिलाएं इस सूची का शीर्ष स्थान लेंगी। वास्तव में, महिलाएं हर समाज में सबसे महत्वपूर्ण कारक होती हैं। हालांकि सभी इस तथ्य को जानते हैं, फिर भी कोई इसे स्वीकारने के लिए तैयार नहीं है। इस परिणामस्वरूप, आज के समाज में महिलाओं को दी जाने वाली महत्ता कम हो रही है।

महिलाओं को अन्यायपूर्ण रूप से कमजोर स्थिति में रखने के इस बढ़ते चलन के महत्व को महसूसा किया गया कि महिलाओं को सशक्तिकरण की आवश्यकता है। आज हम एक स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिकों के लाभ का आनंद उठाते हैं, लेकिन हमें वास्तव में ध्यान देना चाहिए कि क्या हमारे देश के प्रत्येक नागरिक वास्तव में स्वतंत्र हैं या स्वतंत्रता का आनंद ले रहे हैं, इस शब्द के सच्चे अर्थ में। अगर हम अपने देश को ध्यान में लेते हैं, तो प्रत्येक भारतीय नागरिक को कुछ मौलिक अधिकार मिलते हैं। हमारे राष्ट्र की संरचना पुरुषों और महिलाओं के बीच भेदभाव नहीं करती है, लेकिन हमारी समाज उन्हें निर्धन करता है, जिन्हें हमारे संविधान ने उन्हें सौंपे गए कुछ मौलिक अधिकारों से वंचित किया है। इस तरह की वर्तमान स्थिति के कारण, महिलाओं को सभी जंजीरों से मुक्त करने और उन्हें सशक्त बनाने की आवश्यकता थी। यह केवल महिलाओं का सशक्तिकरण है।

महिला सशक्तिकरण केवल भारतीय समाज से सीमित नहीं है। इस मामले में वैश्विक पहलू को विचार करते हुए, हम देखते हैं कि विकसित राष्ट्रों में महिलाओं को समान व्यवहार मिल रहा है। वास्तव में, अगर हम इतिहास का समारोह लेते हैं, तो हमें यह पता चलता है कि समाज में हमेशा से महिलाओं को सेकेंडरी पोजिशन दी गई है, लेकिन प्रकृति द्वारा बनाई गई महिलाओं और पुरुषों के बीच की अंतर ही स्वाभाविक है। यह तब समझ में आता है जब हम शिक्षा के माध्यम से इस तथ्य को समझते हैं। जब अमेरिकी महिलाएं इसे समझीं, तो उन्होंने इस अन्याय का विरोध किया जो उन्हें समाप्त किया गया था, और उन्होंने इसके माध्यम से समान अधिकारों की मांग की। इस अन्याय को समाप्त करने के लिए, संयुक्त राष्ट्र संगठन (यूएनओ) ने एक समझौता बनाया जिसे श्महिलाओं के खिलाफ भेदभाव के सभी रूपों की समाप्ति की समझौताश (सीडॉ) कहा गया है, जो बाद में महिला आयोग के गठन का कारण बना।

इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, हमें यह पता चलता है कि महिला सशक्तिकरण अब एक वैश्विक चर्चा का विषय बन गया है। इस चर्चा के सभी पहलुओं को देखते हुए, हम यह समझेंगे कि महिलाओं के सशक्तिकरण का केवल एक ही माध्यम है – शिक्षा। इसलिए, शिक्षा को महिलाओं के बीच फैलाया जाना चाहिए। स्वतंत्रता के बाद के युग में महिलाओं के बीच शिक्षितता की दर उम्मीदों के मुताबिक नहीं है।

हम एक राष्ट्र के रूप में 2020 तक एक सुपरपावर बनने का सपना देखते हैं। एक सुपरपावर बनने के लिए, हमारे समाजध्राष्ट्र के प्रत्येक घटक को राष्ट्रनिर्माण प्रक्रिया में योगदान देना चाहिए। लेकिन महिलाएं, जो इस समाज का एक मुख्य तत्व हैं, अगर शिक्षित नहीं हैं तो हमें सुपरपावर बनने की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। इसलिए, हमें महिलाओं की शिक्षा के महत्व को जानना चाहिए, जो पुनः महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया को प्रेरित करेगा। इस पेपर का उद्देश्य महिलाओं को विभिन्न सशक्तिकरण के बारे में जागरूक करना है और महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण में शिक्षा के प्रभाव को पहचानना है।

साहित्य की समीक्षा

अफसर एच (1999) लिखते हैं कि लिंग समानता का अधिकार सभी को सम्मान और स्वतंत्रता देता है। गरीबी को कम करने और विकास के लिए लिंग समानता की आवश्यकता होती है। महिला सशक्तिकरण परिवार और समुदाय के स्वास्थ्य, शिक्षा, और भविष्य की पीढ़ियों के लिए उत्पादकता को सुधारता है। विशेषज्ञताओं को महिलाओं के जीवन पर अधिक नियंत्रण देने के लिए शक्ति की असमानता का समाधान किया जाना चाहिए। सर्वसाधारण मानव अधिकार और सतत विकास में महिलाओं की सशक्तिकरण की आवश्यकता है। सतत विकास के लिए महिलाओं और पुरुषों के लिए समान अवसर की आवश्यकता होती है। महिलाएं अभी भी सभी क्षेत्रों में हानिकारक हैं, हालांकि कभी–कभी पुरुष उन्हें पीछे छोड़ रहे हैं। महिलाओं के मुद्दों का समाधान उनकी भूमिका, आयु, सामाजिक स्थिति, शहरी या ग्रामीण पसंद, और शिक्षा को समझने को आवश्यक बनाता है। गरीब महिलाओं और लिंग समानता में निवेश करना घर और समुदाय में विकास को बढ़ावा देता है।

सार्वजनिक सेवा, कृषि, बैंकिंग, और अन्य क्षेत्रों में महिलाएं आर्थिक विकास को बढ़ावा देती हैं और वित्तीय चिंताओं को कम करती हैं।

आंडरसेन, एम. एल. (2019) सशक्तिकरण कई अर्थों में होता है। सोशल वर्क में महत्वाकांक्षा को पुनरारंभ करने के लिए सशक्तिकरण महत्वपूर्ण होता है। यह भी विचार किया जाता है कि क्या सशक्तिकरण सेवा उपयोगकर्ताओं को काम के संविदानित परिदृश्य में उनकी रोजगारी के लिए अधिक जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करता है। एक डेनिश रोजगार केंद्र ने एक छोटे पैमाने पर भागीदारी अभ्यास अनुसंधान प्रयोग की थी। इस अनुसंधान में सेवा उपयोगकर्ताओं और सोशल वर्कर्स के बीच के बातचीतों की जांच की गई थी और उनके करियर के संभावनाओं को समर्थन करने में प्रदान किये गए क्रिटिकल सोच और कार्रवाई के अवसरों की। पेपर यह सुझाव देता है कि सशक्तिकरण, सोशल वर्कर्स के साथ क्रियान्वित किया जाता है तो डेनिश कल्याण में सोशल वर्कर्स की क्रिटिकल सोच और शामिली में सुधार हो सकता है। यह उपाय सशक्तिकरण की असंगतियों या असमान शक्ति संबंधों को समाप्त नहीं करता है, लेकिन यह नियोजित रूप से उन्नति कर सकता है और नियोजन में क्रिटिकल विचार और सीखने में सुधार कर सकता है।

इब्राहीमी, आर., चूबचियान, एस., फरहादियान, ह., गोली, आई., फरमानदेह, ई., और आजादी, एच. (2022) ने पेश किया कि व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (वीईटी) के माध्यम से सशक्तिकृत ग्रामीण महिलाओं को, एक अनदेखी समस्या। इस क्वांटिटेटिव, गैर–प्रयोगात्मक, अनुप्रयोगी अनुसंधान में गांवी महिलाओं और लड़कियों को जिन्होंने वीईटी कक्षाओं में भाग लिया था, उनकी सर्वेक्षण किया गया। एक अनुसंधानकर्ता द्वारा डिजाइन की गई सर्वेक्षण प्रयोग में लाया गया गया। अध्ययन उपकरण का पायलट परीक्षण और क्रॉनबैक्स अल्फा, एवे, और सीआर संघ के संघनिकाय मान ने अच्छी डेटा एकत्रीकरण सत्यता और विश्वसनीयता दिखाई। चार वीईटी मानकों में सामग्री और शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण थे, जो ग्रामीण महिलाओं की पारंपरिक रूप से अपर्याप्त आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ाते हैं। संज्ञान रखते हुए कि अध्ययनीय ढांचा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय हजार की सतत विकास लक्ष्यों में मदद कर सकता है। अध्ययन शिक्षा के सशक्तिकरण में महिलाओं की आर्थिक रूप से मदद करने की संभावनाओं को हाइलाइट करता है। कोई पूर्व अनुसंधान सशक्तिकृत ग्रामीण महिलाओं की सभी शिक्षा घटकों के प्रभाव का परीक्षण नहीं किया गया था, जो भविष्य की योजना में शामिल होना चाहिए।

अध्ययन की परिकल्पना

H01: विभिन्न प्रकार के सशक्तिकरण के बारे में शैक्षिक योग्यताओं में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

H02: सशक्तिकरण के विभिन्न स्तर समग्र सशक्तिकरण की भविष्यवाणी में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाते हैं।

अनुसंधान क्रियाविधि

हरियाणा के जनगणना 2011 का विवरण जारी किया गया है, जिसे हरियाणा के जनगणना कार्यालय ने जारी किया। 2011 में, हरियाणा की जनसंख्या 3,038,252 थी, जिसमें पुरुष और महिलाएँ 1,526,475 और 1,511,777 थीं। 2011 में हरियाणा की औसत साक्षरता दर 83.45 थी जो 2001 में 77.82 के मुकाबले थी। यदि लिंग के आधार पर देखा जाए, तो पुरुष और महिला साक्षरता 89.72 और 77.16 थीं अनुसूची में। यह अध्ययन वर्णनात्मक प्रकृति का है।

हरियाणा राज्य में बारह राजस्व ब्लॉक हैं, जिनमें से अध्ययन के लिए 20–50 आयु समूह की 400 महिला प्रतिक्रियादाताओं का चयन किया गया था। शोधकर्ता ने डेटा संग्रह के लिए एक सुविधाजनक नमूना चयन विधि का उपयोग किया और डेटा संग्रह उपकरण के रूप में एक अच्छी–ढंग से संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया। सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग करके शोधकर्ता अच्छे अभ्यासित शोध सहयोगियों की मदद से प्रश्नावलियों को इकट्ठा करते हैं। प्रतिक्रियादाताओं से कहा गया कि वे अपनी राय के आधार पर विकल्पों का चयन करें, 5 अंकों के लाइकर्ट स्केल में (1–पूरी तरह से असहमत से 5–पूरी तरह से सहमत)।

शोध यंत्र में विभिन्न प्रकार की सशक्तिकरण से संबंधित प्रश्न शामिल हैं जैसे कि व्यक्तिगत सशक्तिकरण, शैक्षिक सशक्तिकरण, आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक सशक्तिकरण, मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण, तकनीकी सशक्तिकरण, राजनीतिक सशक्तिकरण और आयु, शैक्षिक योग्यता, पारिवारिक आय, रोजगार का प्रकार और वैवाहिक स्थिति जैसे जनसांख्यिकीय लक्षण।

डेटा विश्लेषण

तालिका 1 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय विशेषताएं

जनसांख्यिकीय विशेषताएं	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
आयु	20–29 वर्ष	205	51.25
	30–39 वर्ष	149	37.25
	40 वर्ष से ऊपर	46	11.5
शैक्षणिक योग्यता	कला एवं विज्ञान (यूजी)	200	50
	कला एवं विज्ञान (पीजी)	110	27.5
	प्रोफेशनल (यूजी)	43	10.75
	डिप्लोमा	25	6.25
	निरक्षरों	22	5.5
वैवाहिक स्थिति	विवाहित	221	55.25
	अविवाहित	120	30
	विधवा	59	14.75
रोजगार के प्रकार	गृहिणी	276	69
	कार्यरत	124	31
	कुल	**400**	**100.0**

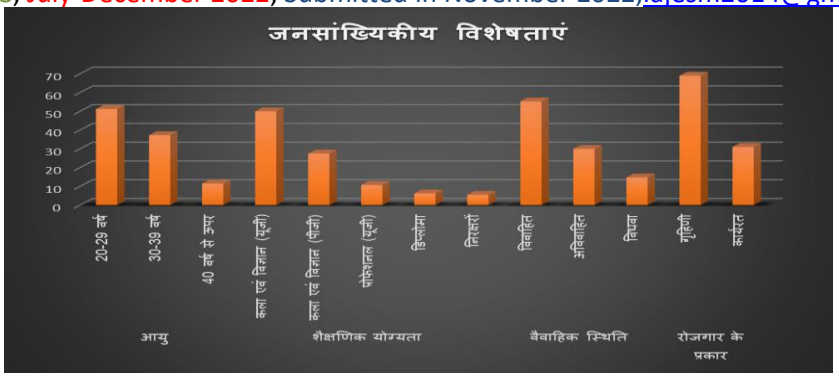

आकृति 1 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय विशेषताएँ

प्रतिक्रियादाताओं के जनसांख्यिकीय लक्षण तालिका 1 में उल्लिखित हैं, जो विभिन्न श्रेणियों में विविध प्रतिनिधित्व का प्रदर्शन करते हैं। आयु वितरण के मामले में, अधिकांश प्रतिक्रियादाता 20–29 आयु सीमा में आते हैं, जिसमें 205 व्यक्तियों का समावेश है, जो नमूने का 51.25: है। उसके बाद, 30–39 वर्षीय व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले 149 प्रतिक्रियादाता हैं, जो कुल का 37.25: बनाते हैं। 40 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्ति एक छोटा हिस्सा बनाते हैं, जिनमें 46 प्रतिक्रियादाता हैं, जो नमूने का 11.5: का प्रतिनिधित्व करते हैं। शैक्षणिक योग्यता के मामले में, प्रतिक्रियादाताओं का आधा हिस्सा, जो कुल 50: को दर्ज करते हैं, स्नातक स्तर पर कला और विज्ञान में समाप्त हैं, जो कुल 200 व्यक्तियों का हिस्सा है।

इसी दौरान, 110 प्रतिक्रियादाता, जो नमूने का 27.5: हैं, स्नातक स्तर पर कला और विज्ञान में अध्ययन किया है। पेशेवर स्नातक स्तर की योग्यताएँ 43 प्रतिक्रियादाताओं द्वारा धारण की गई हैं, जो कुल 10.75: को प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि 25 प्रतिक्रियादाता, जो कि 6.25: के बराबर हैं, डिप्लोमा धारित हैं। प्रतिक्रियादाताओं का एक छोटा प्रतिशत, 22 व्यक्तियों या 5.5:, अशिक्षित के रूप में वर्गीकृत हैं। वैवाहिक स्थिति के संदर्भ में, सबसे बड़ा खंड विवाहित व्यक्तियों से मिलता है, जिनमें 221 प्रतिक्रियादाता हैं, जो नमूने का 55.25: बनाते हैं। अविवाहित प्रतिक्रियादाता कुल में 30: का हिस्सा बनाते हैं, जिनमें 120 व्यक्तियाँ हैं। विधवा जनसांख्यिकीय खाता 59 प्रतिक्रियादाताओं को दर्शाता है, जो कि 14.75: को प्रतिनिधित्व करते हैं। अंततः, रोजगार के प्रकार की जाँच करते हुए, अधिकांश प्रतिक्रियादाता, जो कुल 276 व्यक्तियों का हिस्सा है, गृहिणी हैं, जो नमूने का 69: है।

दूसरी ओर, रोजगारी प्राप्त व्यक्तियों का 31: नमूने का हिस्सा बनाते हैं, जिसमें 124 प्रतिक्रियादाता हैं। समग्र रूप से, डेटा प्रतिक्रियादाता पूल के जनसांख्यिक संरचन का व्यापक अवलोकन प्रदान करता है, जो सर्वेक्षित व्यक्तियों के बीच आयु वितरण, शैक्षिक उपलब्धता, वैवाहिक स्थिति, और रोजगार स्थिति में मूल्यवान अनुसंधान प्रदान करता है।

तालिका 2 वर्णनात्मक आँकड़े और क्रोनबैक अल्फा गुणांक

सशक्तिकरण के विभिन्न प्रकार	माध्य	मानक विचलन	क्रोनबैक अल्फा गुणांक
व्यक्तिगत सशक्तिकरण	3.26	0.94	0.763
सामाजिक सशक्तिकरण	3.28	0.95	0.754
आर्थिक सशक्तिकरण	3.36	0.92	0.811
शैक्षिक सशक्तिकरण	2.96	1.19	0.879
मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण	3.07	1.13	0.759
तकनीकी सशक्तिकरण	3.18	1.00	0.915
राजनीतिक सशक्तिकरण	3.23	1.17	0.785
समग्र सशक्तिकरण	3.86	0.94	0.704

तालिका 2 विभिन्न प्रकार के अधिकार के लिए विवरणात्मक आंकड़े और क्रोनबैक अल्फा कोईफीशियंट्स प्रदर्शित करती है। शक्तिपूर्णता प्रकार को औसत और मानक विचलन के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है ताकि नमूने में औसत और विविधता प्रकट हो। क्रोनबैक अल्फा कोईफीशियंट्स मापों की आंतरिक संगतता निरंतरता को दिखाने के लिए प्रदान की जाती है।

अधिकार के कई वर्गों में औसत स्कोर विभिन्न थे, जिससे प्रत्येक वर्ग के भीतर अधिकार के अनुभूत डिग्री का पता चलता है। सबसे उच्च औसत स्कोर आर्थिक सशक्तिकरण के लिए है, जो 3.36 है, जिसके बाद सामाजिक सशक्तिकरण 3.28 पर तेजी से आता है। व्यक्तिगत सशक्तिकरण, तकनीकी सशक्तिकरण, राजनीतिक सशक्तिकरण, और मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण के उच्च औसत स्कोर हैं, जो 3.07 से 3.26 तक हैं। हालांकि, शैक्षिक सशक्तिकरण का औसत 2.96 है, जिससे इस क्षेत्र में कमजोर अनुभूत सशक्तिकरण का सुझाव दिया जाता है।

मानक विचलन औसत से अंकों के प्रसार को दर्शाते हैं। डेटासेट 0.92 से 1.19 तक के मानक विचलन दिखाता है, जो विभिन्न प्रकार के सशक्तिकरण के बारे में उत्तरदाताओं के विचारों में विविधता के विभिन्न स्तरों को दर्शाता है।

तालिका 2 में शामिल की गई वर्णनात्मक डेटा के साथ क्रोनबैक अल्फा कोईफीशियंट्स, जो प्रत्येक सशक्तिकरण क्षेत्र में मदों की आंतरिक संगतता का मूल्यांकन करते हैं, के साथ शामिल किए गए हैं। कोईफीशियंट्स 0.704 से 0.915 तक भिन्न होते हैं, जो सभी सशक्तिकरण मैट्रिक्स पर आंतरिक संगतता निरंतरता के स्वीकार्य डिग्री को दर्शाते हैं। सारणी 2 में डेटा में एकाधिक क्षेत्रों में मान्यता के स्तर के अनुभव को और सशक्तिकरण का मूल्यांकन करने के लिए उपयोग किए गए मापों की निष्पक्ष जानकारी प्रदान करता है।

तालिका 3 विभिन्न प्रकार के सशक्तिकरण पर शैक्षिक योग्यता का प्रभाव

सशक्तिकरण के विभिन्न प्रकार	एफ मान	पी मान	परिणाम
व्यक्तिगत सशक्तिकरण	3.50	0.008	H0 अस्वीकार
सामाजिक सशक्तिकरण	2.11	0.078	H0 अस्वीकार
आर्थिक सशक्तिकरण	6.26	0.000	H0 अस्वीकार
शैक्षिक सशक्तिकरण	5.74	0.000	H0 अस्वीकार
मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण	4.96	0.001	H0 अस्वीकार
तकनीकी सशक्तिकरण	5.05	0.001	H0 अस्वीकार
राजनीतिक सशक्तिकरण	4.13	0.003	H0 अस्वीकार
समग्र सशक्तिकरण	7.29	0.000	H0 अस्वीकार

सभी प्रकार के सशक्तिकरण के लिए पी मान 0.05 से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना खारिज कर दी जाती है और यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि विभिन्न प्रकार के सशक्तिकरण के संबंध में शैक्षिक योग्यताओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है।

चर्चा और निष्कर्ष

गतिशील राज्य हरियाणा, जो जांच के स्थल था। अध्ययन ने पाया कि प्रतिक्रियात्मक विश्लेषण में उत्तरदाताओं की शैक्षिक योग्यता उनके कुल सशक्तिकरण और संबंधित विशेषताओं पर प्रभाव डालती है। शैक्षिक, राजनीतिक, और मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण ने रेग्रेशन विश्लेषण में कुल सशक्तिकरण की पूर्वानुमानित। महिलाओं को सशक्त करना केवल उनके अधिकारों और कर्तव्यों को समझने से अधिक है। उच्च शिक्षा के साथ महिलाओं के अधिक नौकरी के अवसर और वित्तीय सुरक्षा होती है।

डेटा एकत्र करते समय कई उत्तरदाताओं को उनकी शिक्षा के बावजूद सशक्तिकरण के बारे में जानकारी की कमी महसूस होती है। क्योंकि शिक्षा सशक्तिकरण का मुख्य तरीका है, इसमें अन्य कारक भी प्रभाव डालते हैं। इस अनुसंधान से सुझाव दिया जाता है कि ग्रामीण महिलाओं को आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में शिक्षित किया जाए ताकि वे अंधविश्वास को छोड़ सकें। ग्रामीण महिलाओं को हैंडलूम और टेक्सटाइल, मुर्गी खाने, मछली पालन, सुअर पालन, डेयरी खेतों, खाद्य और पोषण, फैशन और डिजाइन, सौंदर्य पार्लर आदि में पढ़ाया जाना चाहिए। सभी क्षेत्रों में महिलाओं के आरक्षण को सक्रिय किया जाना चाहिए, जिसमें सरकारी और अर्ध–सरकारी नियुक्तियों, शैक्षिक प्रवेश, राजनीतिक भागीदारी आदि शामिल हो।

अनुसंधान ने पाया कि लिंग के बाधाओं का अब भी बना रहता है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। अनुसंधान अधिक दूरस्थ स्थानों को शामिल करता है। ग्रामीण महिलाओं की क्षमता का अपव्यय हुआ है और इसे आर्थिक–सामाजिक प्रतिबंधों के कारण सामाजिक व्यवस्था में वापस धकेल दिया गया है। अधिकांश शिक्षित महिलाएं मानती हैं कि वे पुरुषों को पीछे छोड़ सकती हैं। हालांकि, गहरी मान्यता है कि महिलाएं कम काम करती हैं और कम प्रभावी हैं। शिक्षा की कमी सशक्तिकरण में बाधा डालती है। उपरोक्त सभी की समीक्षा करने के बाद, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संक्रमण आवश्यक है, भले ही इसकी गति अपेक्षित से धीमी हो। इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है। इस प्रकार, केवल शिक्षा ही महिलाओं को सशक्त बना सकती है। इसलिए, महिलाओं को शिक्षित करना महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

- डकोस्टा, डी., 2008। बिगड़ैल बेटे और, ईमानदार बेटियाँरू ग्रामीण पश्चिम बंगाल, भारत में स्कूली शिक्षा, सुरक्षा और सशक्तिकरण। संकेतरू संस्कृति और समाज में महिलाओं का जर्नल 33 (2), 283–307।
- हार्टस्टॉक, एन., 1983. मनी सेक्स एंड पावररू टुवर्ड्स ए फेमिनिस्ट हिस्टोरिकल मैटेरियलिज्म। लॉन्गमैन, न्यूयॉर्क।
- हुक्स, बी., 2000. नारीवाद सबके लिए है। साउथ एंड प्रेस, कैम्ब्रिज, एमए।
- कबीर, एन., 1999। संसाधन, एजेंसी उपलब्धियाँरू महिला सशक्तिकरण के मापन पर विचार। विकास और परिवर्तन 30, 435–464।
- कार्लबर्ग, एम., 2005। प्रवचन की शक्ति और शक्ति का प्रवचनरू प्रवचन हस्तक्षेप के माध्यम से शांति का अनुसरण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पीस स्टडीज 10 (1), 1–25।
- मल्होत्रा, ए., शूलर, एस., बोएन्डर, सी., 2002. अंतर्राष्ट्रीय विकास में एक चर के रूप में महिला सशक्तिकरण को मापना। विश्व बैंक के लिंग और विकास समूह द्वारा कमीशन किया गया पेपर।
- मोसेडेल, एस., 2005। महिला सशक्तिकरण का आकलनरू एक संकल्पनात्मक ढांचे की ओर। जर्नल ऑफ इंटरनेशनल डेवलपमेंट 7 (2), 243–257
- मर्फी–ग्राहम, ई., 2008. ब्लैक बॉक्स खोलनारू होंडुरास में महिला सशक्तिकरण और नवीन माध्यमिक शिक्षा। लिंग और शिक्षा 20(1), 31–50।
- ऑक्साल, जेड., बैडेन, एस., 1997. लिंग और सशक्तिकरणरू नीति के लिए परिभाषाएँ, दृष्टिकोण और निहितार्थ। ब्रिज रिपोर्ट संख्या 40। विकास अध्ययन संस्थान, ससेक्स विश्वविद्यालय, ब्राइटन, यूके।
- पैपार्ट, जे., राय, एस., स्टौड्ट, के. (सं.), 2002. रीथिंकिंग एम्पावरमेंटरू जेंडर एंड डेवलपमेंट इन ए ग्लोबलध्लोकल वर्ल्ड। रूटलेज, लंदन।
- स्टैकी, एस., मॉन्कमैन, के., 2003. सशक्तिकरण प्रक्रियाओं के माध्यम से परिवर्तनरू दक्षिण एशिया और लैटिन अमेरिका से महिलाओं की कहानियाँ। 33(2), 173–189 की तुलना करें।
- स्ट्रोमक्विस्ट, एन.पी., 2002. महिलाओं को सशक्त बनाने के साधन के रूप में शिक्षा। इनरू पैपार्ट, जे., राय, एस., स्टॉड्ट, के. (एड्स.), रीथिंकिंग एम्पावरमेंटरू जेंडर एंड डेवलपमेंट इन ए ग्लोबलध्लोकल वर्ल्ड। रूटलेज, लंदन।
- अनटरहल्टर, ई., 2007. लिंग, स्कूली शिक्षा और वैश्विक सामाजिक न्याय। रूटलेज, लंदन।